जुलाई 2025
वर्ष 5 अंक 11

चहल पहल

अनुक्रमणिका

संपादकीय 3

कहानियां

कपड़े का थैली...	पवित्रा अग्रवाल	4
बीज मंत्र	कन्हैया साहू	6
चिंटू का घर	डॉ. कुसुम रानी	11
जरूरत का रिश्ता..	डॉ. सत्यवान	14
वट बीज	अंकूश्री	22

कविताएं

बरखा रानी	अशोक आनन	08
खट्‌टी मिठी...	रश्मि मृदुलिका	08
मैं पंछी हूं	व्यग्र पांडे	09
मुन्ना आया....	कृष्णा कुमारी	09
भीषण गर्मी	वरूण देव	10
जंगल की ओर..	डॉ. कमलेन्द्र	10
आम और नानी	सुकीर्ति भटनागर	13
पत्र आया बादलों..	पुरूषोत्तम व्यास	13
बचपन की यादें	आयुष्मान वर्मा	23

विविध

बच्चों का कोना	15 से 17	
भूल–भूलैया	चांद मोहम्मद घोसी	18
दुनियां के देश	संजय पुरोहित	19
चहल–पहल......	शर्मिला जालान	24
जाने आकाश के.....	संजय श्रीमाली	25

अजित फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित

संपादक - संजय श्रीमाली

जुलाई 2025

आप अपनी रचनाएं इस ईमेल पते पर भेजे
chahalpahalnew@gmail.com

मुख्य आवरण पृष्ठ अंकित चित्र मंदाकिनी द्वारा बनाया गया है।

संपादकीय

हरियाली हमारे जीवन का अभिन्न अंग है

प्यारे बच्चों !

गर्मी की छुट्टियों का बहुत मजा ले लिया। सबने अपने-अपने अंदाज में छुट्टियों का आनन्द लिया होगा। कुछ बाहर घुमने गए होगें, कुछ ने अपने रूचि के खेल खेले होगें तो कुछ ने रूचि क्लासों में कुछ नया सीखा होगा । कुल मिलकार एक आनन्द भरा समय आपने परिवार के साथ बिताया। अब पुनः स्कूल बेग संभालने का समय आ गया। नई-नई किताबों के साथ-साथ नई क्लास में प्रवेश करना तथा वहां कुछ नए दोस्त मिलना बहुत ही रोचक लगता है। इतने दिन आराम करने के बाद एक बार स्कूल जाना थोड़ा कठिन लगता है, लेकिन दूसरी तरफ कुछ नया पढ़ने को मन भी करता हैं।

आपका रूटिन धीरे-धीरे पुनः बन जाएगा और आपको मजा भी आने लगेगा। जुलाई माह में लगभग बरसात को मौसम आरम्भ हो जाता है। चारो आरे हरियाली देखने को मिलती है। आप भी अपने आस-पास खाली जमीन में कुछ पौधे लगाकर उनकी देखभाल कर सकते है। आस-पास जगह न हो तो अपने घरों में गमलों में भी पौधे लगाये जा सकते हैं। हरियाली हमारे जीवन का अभिन्न अंग है जो हमें खुशहाली प्रदान करता है। इस ओर प्रयास करने चाहिए।

बच्चों इस माह आपके सबसे पसन्दिदा खाने की चीज का दिवस भी है, हां, मैं बात कर रहा हूं "चॉकलेट" की। ७ जुलाई को विश्व चॉकलेट दिवस है। इसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाता है। आप भी इस दिन अपने मित्रों को चॉकलेट देकर मित्रता में मिठास घोल सकते हैं। मित्रता में लेन-देन होना चाहिए, जिससे एक दूसरे के प्रति सहयोग की भावना विकसित होती है तथा मित्रता में प्रगाढता आती है।

संजय श्रीमाली

कपड़े की थैली क्यों

पवित्रा अग्रवाल

रतन थैला ले कर घर से बाहर निकला ही था कि उसका दोस्त हर्ष मिल गया। अरे ! रतन इस समय यह थैला ले कर कहाँ जा रहे हो ?

माँ ने सब्जी लाने को कहा है। पास में जो सब्जी की दुकान है न, वहीं जा रहा हूँ। तुझे सब्जी लेनी आती है ? सब्जी लेने में क्या है ? अरे ! उनसे मोल–भाव करना पड़ता है, जरा सी नजर बचे तो वह खराब सब्जी तोल देते हैं। क्या तू घर के लिए कभी सब्जी नहीं लाता ? कभी कभी लाता हूँ। अधिकतर मम्मी–पापा स्कूटर पर जा कर ले आते हैं। मम्मी ने एक बार धनिया, पुदीना और मेथी लाने को कहा था। मुझे पहचान नहीं थी.... कुछ का कुछ ले आया।

चित्र : अनुराधा शर्मा

रतन ने शरारत से कहा–– आज मेरे साथ चल, तुझे सब्जी लेना सिखा दूंगा। हर्ष ने हँसते हुए कहा– ठीक है गुरुजी।

सब्जी खरीदते समय हर्ष ने देखा कि रतन ने बड़े थैले में से कुछ छोटी–छोटी कपड़े की थैलियाँ भी निकाल कर सब्जी वाले को देते हुए कहा– अंकल मुझे प्लास्टिक की थैलियां में नहीं मेरे इन थैलों में ही सब्जियां देना।

हर्ष ने कहा– रतन सब्जी वाले थैलियाँ देते तो हैं तू घर से यह सब क्यों ले कर आया है ? यह आदत मैंने अपने पापा से सीखी है। वह हमेशा घर से थैला ले कर जाते हैं। पहले तो वह एक थैले में ही सब सब्जियां रखवा लेते थे पर सब्जी खाली करने में मम्मी

परेशान हो जाती थीं। भिंडी, सैम, बीन्स, हरीमिर्च सब सब्जी आपस में मिल जाती थीं फिर उन्हें अलग करने में समय लगता था। यह समस्या हमारे यहाँ भी आती थी तब से मम्मी सब्जी वाले से अलग–अलग प्लास्टिक की थैली लेने लगीं। पर हमारे यहाँ ऐसा नहीं हुआ, पापा को पर्यावरण की बहुत चिंता रहती है और प्लास्टिक की थैलियों से तो वह बहुत चिड़ते हैं तब से घर में पहले से पड़ी यह छोटी प्लास्टिक की थैलियां साथ ले कर आने लगे। थैलियां नहीं होती हैं तो कपड़े की छोटी थैलियां मम्मी ने बहुत सी बना रखी हैं उन्हें ले आते हैं।

हाँ रतन यह तो सुना है कि कुछ राज्यों ने तो प्लास्टिक की थैलियों पर सख्ती से बैन लगा रखा है। अपने राज्य में शायद अभी इसे लागू नहीं किया है। हर्ष बैन तो यहाँ भी है पर सख्ती के बिना पब्लिक मानती कहाँ है। सब जानते हैं कि प्लास्टिक की थैलियां जानवरों के लिए तो कई बार जान लेवा साबित होती हैं। जैसे लोग बासी खाना, सब्जी और फलों के छिलके इन थैलियों में डाल कर बाहर कचरे में फेंक देते हैं। गायें, भैंस खाने के चक्कर में कई बार इसे भी निगल जाती हैं। इस तरह कई बार तो उनकी जान पर बन आती है...इन से नालियाँ चोक हो जाती हैं...और भी बहुत से नुकसान हैं।

हाँ रतन यह सब पढ़ता तो मैं भी रहता हूँ पर इन पर कभी गहराई से सोचा नहीं। अब मैं भी मम्मी से कहूँगा कि कुछ कपड़े की थैलियां बना कर घर में रख लें व एक दो स्कूटर की डिक्की में पड़ी रहने दें। हाँ हमारे स्कूटर में भी एक–दो थैली अलग से रखी रहती हैं।

यार रतन आज तेरे साथ आ कर बड़ा अच्छा लगा। एक तो मुझमें आत्मविश्वास पैदा हुआ कि मैं भी तेरी तरह सब्जी लाकर माँ की मदद कर सकता हूँ। तूने कितनी अच्छी तरह चुन–चुन कर सब्जी ली हैं...मैं तो सब्जी वाले से कहता था यह दे दो, वह दे दो। घर जा कर पता लगता था कि उसने कुछ खराब सब्जियाँ भी तोल दीं हैं। दूसरी बात प्लास्टिक की थैलियों का उपयोग भी बंद करना चाहिए।... एक बार फिर थैंक्स रतन।

पता – बी–502, ब्रिगेड मेट्रोपोलिस,
महादेवपुरा, बेंगलौर

बीज मंत्र

कन्हैया साहू

गर्मी की छुट्टियाँ चल रही थीं। चिंकी, चिंटू, मुनिया और मोनू रोज गाँव के अमरैया की छाँव में जुटते। पास ही दादा जी खेतों की रखवाली में लगे रहते। सधे हुए अनुभव और नवल उर्जा जैसे जीवन के दो सिरों की संगति। पेड़ों की झरती पत्तियाँ और धरती की तपन देखकर बच्चों की बातें दिन–ब–दिन गर्म होती जा रही थीं। लेकिन चिंटू की आँखों में कोई सवाल धूप की तरह चमक रहा था। आज उस सवालों को थामे वह अपने बाल टोली के साथ दादाजी के पास जा पहुँचा। दादू, पेड़ तो सभी जगह कम होते जा रहे हैं और गर्मी बढ़ते जा रही है। क्या ऐसे ही चलता रहेगा ? चिंटू ने चिंता के स्वर में पूछा। दादा जी की आँखों में समय की

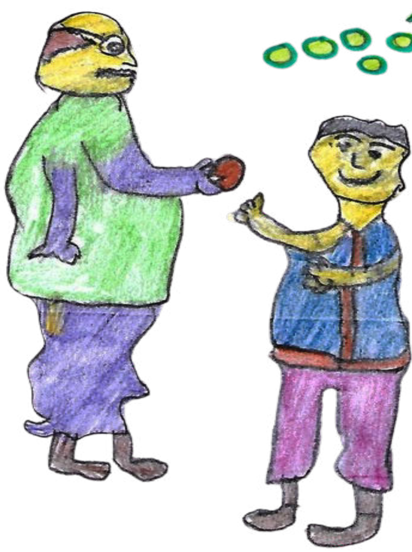

चित्र : धीरज कच्छावा

गहराई थी। वे बोले– बेटा, पेड़ तो धरती के प्राण हैं। इनका कम होना मतलब हमारी साँसों का कम होना है। दादा जी! इससे बचने के लिए क्या उपाय हैं ? चिंकी पूछ पड़ी। हम सबको पेड़ लगाकर उसकी रक्षा करनी चाहिए, दादा जी बोले, मानो कोई मंत्र उचार रहे हों। यह तो बड़े–बुजुर्गों का काम है दादा जी, हम बच्चे क्या कर सकेंगे? मुनिया ने सहज प्रश्न रखा। अरे बेटू! अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। पेड़ हम सब मिलकर लगा सकते हैं, इसमें बच्चे–बूढ़े का सवाल नहीं है, दादा जी ने प्रेम से समझाया। अरे वाह! यह तो बहुत अच्छी बात है कि हम भी वृक्षारोपण कर सकते हैं! मोनू उत्साहित होकर बोला। बस फिर क्या था, बच्चों ने कमर कस ली और समूह

स्वर में कहने लगें। अबकी बार बरसात, बीजों की बारात! हमें इसके लिए कुछ तैयारी करनी होगी। घर के आसपास, बाजार आदि स्थानों पर आसानी से मिलने वाले फलों के बीजों को एक जगह इकट्ठा करना होगा, दादा जी ने अगली योजना बताई। हम इन बीजों का क्या करेंगे दादू ? चिंकी ने जिज्ञासा से पूछा। बरसात आने पर इन्हीं बीजों को धरती में रोपना होगा, तभी पेड़ उगेंगे। दादा जी ने धैर्यपूर्वक समझाया।

वो कैसे ? चिंटू पूछ बैठा। हमारे आसपास नीम, इमली, आम, सीताफल, शीशम, जामुन, अमरूद, सहजन, कहुआ, करण, बबूल आदि के बीज मिल जाते हैं। इन्हें इकट्ठा करके एक ''बीज–बैंक'' बनाएंगे। दादू! लेकिन इसे हम लगाएंगे कैसे ? मुनिया ने प्रश्न किया। अरे बिटिया! गोबर और मिट्टी में बीज लपेटकर गोलियाँ बनाएंगे। एक थैली में इस 'बीज–बम' को रखेंगे– धरती को देने का सबसे सच्चा उपहार, दादा जी ने गर्व से कहा। दादू, हम इस बीज बम का क्या करेंगे ? हमें तो पेड़ लगाना है, बम नहीं बरसाना है! चिंकी कौतूहल से बोली।

दादा जी मुस्कराए, बोले– तुम तो पेड़ लगाने के लिए घोड़े पर सवार हो! तनिक धीरज रखो बेटू! हाँ दादा जी! हमें क्या करना होगा, बताइए, मोनू ने चिंकी को चुप कराते हुए कहा। अब जब भी हम ट्रेन या बस से कहीं आए ँ–जाएँ, बीजों की थैली अपने साथ रखें। बीज बम को खिड़की से बाहर फेंकते जाएँ।

जहाँ बीज, धरती दिखेगी, वहीं हरियाली भी बिखरेगी। दादा जी ने बच्चों को बीज मंत्र देते हुए कहा। वाह! यह तो बहुत ही आसान काम है– आम के आम, गुठलियों के भी दाम! यात्रा का आनंद और वृक्षारोपण का लाभ एक साथ! चिंटू चहकते हुए बोला। सभी बच्चों ने एक–दूसरे के हाथों पर हाथ रखा। धरती को बचाने, पेड़ लगाने का संकल्प लिया। वे समूह स्वर में बोले– बोएंगे बीज जहाँ–तहाँ, होगी हरियाली वहाँ–वहाँ।

पता – बलौदा बाजार, छत्तीसगढ़

बरखा रानी

अशोक आनन

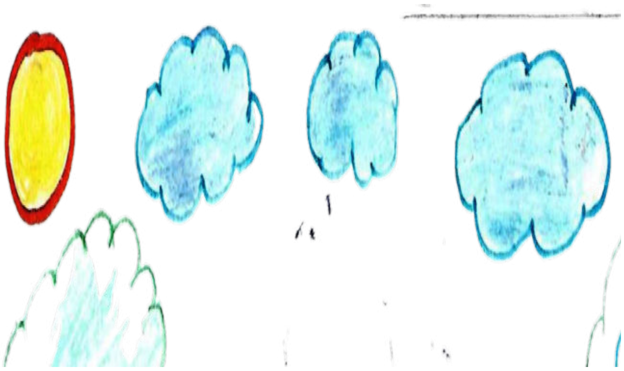

चित्र – नवीन रांकावत

बरखा रानी ! बरखा रानी !
मेघों में तुम लातीं पानी ।

कभी ज़ोर से खूब गरजतीं ।
गरज – गरजकर तुम बरसती ।
कभी रूठ तुम जातीं ऐसी ।
सारी दुनिया तुम्हें तरसती ।

करती हो तुम क्यों नादानी ?
बरखा रानी ! बरखा रानी !

कभी सभी को प्यार जतातीं ।
प्यार जताकर हृदय लगातीं ।
कभी रूठ तुम जातीं ऐसी।
मचल–मचलकर त्राहि मचातीं ।
करती हो क्यों तुम मनमानी ?
बरखा रानी ! बरखा रानी !

पता –शाजापुर, मध्यप्रदेश

चित्र – राधिका जावा

खट्टी-मीठी अमिया

रश्मि मृदुलिका

आओ, चिंटू, मिंटू, और रानी,
भर गई है अमिया की डाली,
खट्टी–मीठी अमिया मन ललचावै,
बगिया की ओर दौड़ लगावे,
देख कर माली मीठी डांट लगाये,
पहले पकने दो आमों को,
मत तोड़ो कच्चे अमिया को,
टोकरी भर –भर खाने को मिलेंगे,
सब्र का फल चखने को मिलेगें,
देखो, माली दादा वादा भूल न जाना,
हम बच्चों को मत बिसराना,
सारे बाजार मत बेच आना,

पता –देहरादून, उत्तराखंड

मैं पंछी हूं...

व्यग्र पाण्डे

चित्र – नवरतन

मैं पंछी हूं फिर भी देखो
रहती मुझको चिंता कल की
तू बेहोश मनुष्य होकर भी
करता नहीं इक चिंता पल की।
देख वर्षा आने से पहले
मैं कर्म में जुट जाती हूं
निज संस्कार कौशल से
सफल इंजीनियर बन जाती हूं।
हूं तो एक छोटी सी चिड़िया
मुझसे सीखा जा सकता है
अपनी चिंताओं का निस्तारण
हे मानव तू पा सकता है।
लग्न और मेहनत से सारे
कठिन कार्य हो जाते हैं
समय का सदुपयोग करें जो
संसार में सुख पाते हैं।
सीख ना अब बंदर को देती
उजड़ा था कभी आशियाना
अरे तू भी तो है उसका वंशज
ग़लती फिर से मत दोहराना।

पता – कर्मचारी कालोनी,
गंगापुर सिटी (राज.)

मुन्ना आया, मुन्ना आया..

कृष्णा कुमारी

मुन्ना आया, मुन्ना आया।
सॅग में ब्रीफकेस भी लाया।

घड़ी हाथ में, पैर में बूट,
जेण्टल मैन, पहन कर सूट,
झट से बोला नानी देखो
आज लाड़ला तेरा आया...

सर पर पहन रखा है हेट,
कंधे कर लटका है बेट,
देख–देख नाना–मामा को
मुन्ना कुछ कुछ शरमाया.....
घर आते ही टी.वी. ऑन,
कभी डान्स, कभी रिंग टॉन,
नानी ने जब गले लगाया
मुन्ना खुल कर हर्षाया..

आम, सन्तरे, जामुन, केक,
नाना भर कर लाये बेग,
कई खिलौने, टॉफी, बिस्किट
मामा भर भर थैले लाया...

दौड़ लगाए इधर उधर,
गूँज उठा सारा ही घर,
मुन्ने की किलकारी से अब
हर कौना खिल...खिल मुस्काया...

चित्र – सुधा व्यास

पता –सी –368, तलवंडी, कोटा

भीषण गर्मी

वरुण देव

चित्र – गिरधर

सूरज चाचु सर पर
ऐसे चढ़ जाते हैं,
दिखाकर अपनी गर्मी
सबको खुब सताते हैं।

पके हुए आम खाने में
मज़ा तो खुब आता है,
पर इस भीषण गर्मी को
सहना ना कोई चाहता है।

मानव ने कर दिया
पर्यावरण का बुरा हाल
इस तपती धूप से
हर कोई रहता बेहाल।

सुख चुकी सब नदियां
मुरझा गए सारे फूल,
अपना फायदे के लिए
इंसानों ने की बड़ी भूल।

बच्चों के अंदर अब
कम हो गया उमंग
गर्मी ने घटा दिया
धरती का सुंदर रंग

अभी भी देर नहीं हुई,
चलो मिलकर कसम खाए
पेड लगाए, जल बचाए,
धरती को स्वर्ग बनाए

कक्षा–10, गुरुकुल शिक्षा निकेतन

जंगल की ओर चलें

डॉ. कमलेंद्र कुमार

कौआ, कोयल, सारस, बुलबुल,
मोर बटेर और तीतर।
मैना, मुर्गी, उल्लू ,मुर्गा ,
दो बगुला और कबूतर।

साथ मिले जब एक जगह पर,
बहुत हुई जब परिचर्चा।
कमर तोड़ दी महंगाई ने,
चले मुश्किल से खर्चा।

भिंडी, पालक, आलू, बैगन,
कद्दू लौकी परवल।
चालिस पार हुए हैं सारे,
है जीना मुश्किल हर पल।

अदरक और टमाटर, शलजम,
सब ऐंठ रहे हैं ऐसे।
घोड़ी चढ़कर घूम रहे हों,
बने हो दूल्हा जैसे।

शहर छोड़ अब दूर चलो सब,
कानन में वास बनाएं।
कंदमूल, नारंगी, इमली ,
हम जो चाहे सब खाएं।

भांति भांति के फूल खिलें हैं,
है निर्मल मीठा पानी।
हरी घास के बने बिछौने,
पर खूब करें शैतानी।

पता – जालौन, उत्तर प्रदेश

चिंटू का घर

डॉ. कुसुम रानी नैथानी

चिंटू वीवर कई दिनों से नदी पर अपने लिए घर बनाने में जुटा था। वह एक मेहनती जल इंजीनियर था जो लकड़ियों और मिट्टी का उपयोग करके एक मजबूत बाँध और सुंदर घर बना रहा था। पानी की धाराओं को नियंत्रित करने के लिए उसने बड़े जतन से शाखाओं को जमा किया था। हर दिन वह अपनी मेहनत को देखकर गर्व महसूस करता। लेकिन अभी उसका काम पूरा भी नहीं हुआ था कि अचानक एक दिन मौसम खराब हो गया। आकाश में घ ाने बादल छा गए और तेज हवा के साथ बारिश की मोटी बूंदें गिरने लगीं। देखते ही देखते नदी का जलस्तर बढ़ने लगा और उसके बाँध का एक बड़ा हिस्सा पानी में बह गया।

चिंटू नदी के किनारे खड़ा यह सब देख रहा था। उसकी आंखें भर आईं। उसे समझ नहीं आ रहा था कि अब वह क्या करे ? उसकी मेहनत का एक–एक तिनका पानी में समा गया था। तभी उसके पास मोंटी कछुआ धीरे–धीरे चलता हुआ आया। वह कई वर्षों से इस नदी में रह रहा था और जल के प्रवाह को समझता था।

चिंटू, क्या हुआ ? इतने उदास क्यों बैठे हो ? मोंटी ने पूछा। मेरा बाँध और घर बह गया। इतनी मेहनत की थी मैंने लेकिन अब फिर से सब शुरू करना पड़ेगा। चिंटू ने भारी मन से कहा। तुम तो जल के सबसे कुशल इंजीनियर हो! तुम्हारी बुद्धिमानी और मेहनत से फिर से एक मजबूत घर बन सकता है।

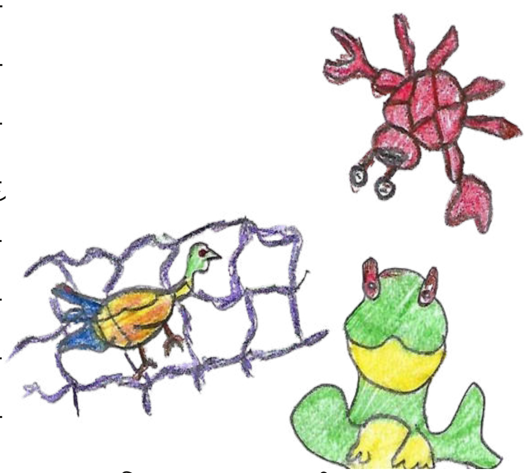

चित्र – नव्या भाटी

तुम ठीक कहते हो, लेकिन यह काम इतना आसान नहीं है। बारिश रुक ही नहीं रही और नदी का पानी भी बढ़ता जा रहा है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि कहाँ और कैसे बाँध

बनाऊँ ताकि यह फिर से न बहे। इतना कहकर चिंटू चुप हो गया। तभी चीची ऊदबिलाव वहाँ आ गया। वह तेज़ धाराओं में तैरने का माहिर था और नदी के बदलते स्वरूप को बारीकी से देखता था। अरे चिंटू! सुना है तुम्हारा बाँध पानी में बह गया ? चीची ने पूछा। तुम ने सही सुना है। चिंटू ने लंबी सांस लेते हुए कहा। अब क्या करने का सोच रहे हो ? चीची ने अपनी पूंछ हिलाते हुए पूछा। यही मुझे समझ नहीं आ रहा। अगर फिर से यहीं घर बनाऊँगा तो बारिश होने पर वह दोबारा बह सकता है।

चींचीं ने इधर–उधर देखा और बोला– मेरे पास एक उपाय है! तुम नदी के ज्यादा करीब घर मत बनाओ। उसकी जगह थोड़ा ऊँचे स्थान पर बाँध बनाओ जहाँ पानी का प्रवाह थोड़ा धीमा होता है। इससे तुम्हारा घर सुरक्षित रहेगा। चिंटू को यह बात जंच गई। वह आसपास एक ऊँची जगह ढूंढने लगा। आखिरकार उसे एक ऐसा स्थान मिला जहाँ पानी का बहाव थोड़ा स्थिर था। यहाँ मेरा घर सुरक्षित रहेगा। चिंटू ने अपने से कहा और फौरन काम में लग गया।

इस बार मोंटी और चीची ने भी उसकी मदद करने की ठानी। कछुए ने मजबूत घास और पत्तियाँ इकट्ठी कीं जो बाँध को और टिकाऊ बना सकती थीं। वहीं चीची ने नदी की मिट्टी और काई लाकर दी जिससे बाँध को और मजबूती मिल सके।

चिंटू का जोश फिर से जाग उठा। वह पूरी लगन से बाँध बनाने में जुट गया। इस बार उसने बाँध को और भी मजबूत बनाया ताकि पानी और बारिश के प्रभाव से यह कमजोर न पड़े। कुछ ही दिनों में उसका नया बाँध तैयार हो गया। ऊँचाई पर होने की वजह से वह बारिश और बाढ़ से सुरक्षित था। जब दोबारा बारिश हुई और नदी का पानी बढ़ा तो इस बार चिंटू का घर और बाँध सुरक्षित बने रहे।

वाह! देखो तुम्हारा नया घर कितना मजबूत और सुरक्षित है! चीची ने खुश होकर कहा। हाँ! इस बार इसे बारिश और बाढ़ से कोई नुकसान नहीं होगा। मोंटी ने खुशी जताई। चिंटू ने अपने दोनों दोस्तों की ओर देखा और मुस्करा कर कहा– अगर तुम मेरी मदद न करते, तो शायद मैं इतनी जल्दी यह घर नहीं बना पाता। तुमने सही कहा था मेहनत और समझदारी से काम लेने पर कोई भी मुश्किल आसान हो सकती है।

यह सुनकर वे दोनों हँस पड़े। तीनों दोस्तों ने मिलकर इस खुशी का जश्न मनाया। चिंटू अब अपने नए घर में सुरक्षित था और उसे यकीन हो गया कि हर कठिनाई का समाधान मेहनत, सहयोग और सूझबूझ से निकाला जा सकता है।

पता – 318 ओंकार रोड, यू.के.

आम और नानी

सुकीर्ति भटनागर

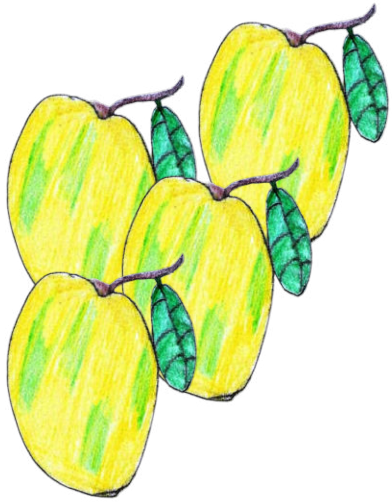

चित्र – मिनाक्षी शर्मा

कच्चे– कच्चे आम देख कर,
नन्हा गोलू था ललचाया।
पर तोड़े तो तोड़े कैसे,
देख वहाँ नानी चकराया।।

जा पास उनके वह बोला,
ओ अच्छी, ओ प्यारी नानी।
बाहर गर्मी, आ भीतर चल,
और सुना तू मुझे कहानी।।

हँसते– हँसते नानी बोली,
है गोलू तू तो शैतान।
तेरी रग– रग को पहचानूँ,
समझ ना तू मुझको नादान।।

जान गई मैं, तोड़ेगा तू,
निज बगिया के कच्चे आम।
ध्यान नहीं रहता तब तुझको,
जाने खाता कितने आम।।

इससे तो अच्छा तुड़वा लूँ,
बब्बन माली से कुछ आम।
डाल मुरब्बा उन आमों का,
कर दूँगी मैं तेरे नाम।।

आँख– गला सब सही रहेंगे,
बनेगी सेहत तब भरपूर।
आ जाएगी तन में चुस्ती,
सभी बीमारी होगी दूर।।

पता – 432, अर्बन एस्टेट, फेज़ 1 बी, पटियाला

पत्र आया बादलों का

पुरुषोत्तम व्यास

चित्र – जाहन्वी जोशी

पत्र आया बादलों का
जल्दी से ,
अपनी छतरी और रेनकोट
कर लो ठीक,
मैं आ रहा हूँ तुमसे मिलने को
मैंने भी जवाब भेजा
मैंने सब में छेद कर दिए
तुम जल्दी आओं बरसने को.।.

पता – बड़ा जैन मंदिर, बर्तन बाजार
अमरावती (महाराष्ट्र)

ज़रूरत का रिश्ता

डॉ सत्यवान सौरभ

रामेश्वरी देवी को मोबाइल चलाना नहीं आता था, पर बेटे की तस्वीर स्क्रीन पर देखना उन्हें अच्छा लगता था। सुबह–सुबह मोबाइल पर घंटी बजी। कोई कॉल नहीं था, एक नोटिफिकेशन था "Order Delivered". उनके बेटे रोहित ने दूध, दवाई और फल का ऑनलाइन ऑर्डर दिया था... अपने घर से, जो कि दिल्ली में था। माँ हरियाणा के छोटे से कस्बे में अकेली रहती थीं।

चित्र – निकिता स्वामी

"बेटा बहुत ध्यान रखता है मेरा," रामेश्वरी देवी हर किसी से गर्व से कहतीं। पर सच यह था कि बेटा फोन नहीं करता था, बस महीने में एक बार सामान भिजवा देता था। एक दिन मोहल्ले की बिटिया आरती आई, बोली, "अम्मा जी, आपके बेटे का बर्थडे है आज, आपने विश किया?"

रामेश्वरी देवी मुस्कुरा दीं, "हमारा रिश्ता अब सिर्फ OTP तक सीमित रह गया है बेटा, बर्थडे विश करने के लिए 'प्यार' चाहिए होता है, ''ज़रूरत नहीं।"

आरती चुप हो गई। अम्मा की आँखें भी। कभी बेटे की फोटो को छूतीं, कभी छत पर उड़ते पंछियों को देखतीं। रिश्ते जब एहसास से ज्यादा सुविधा बन जाएं, तो प्यार की ज़मीन दरकने लगती है।

पता – कौशल्या भवन, भिवानी, हरियाणा

बच्चों का कोना

शशिकला जोशी, बीकानेर

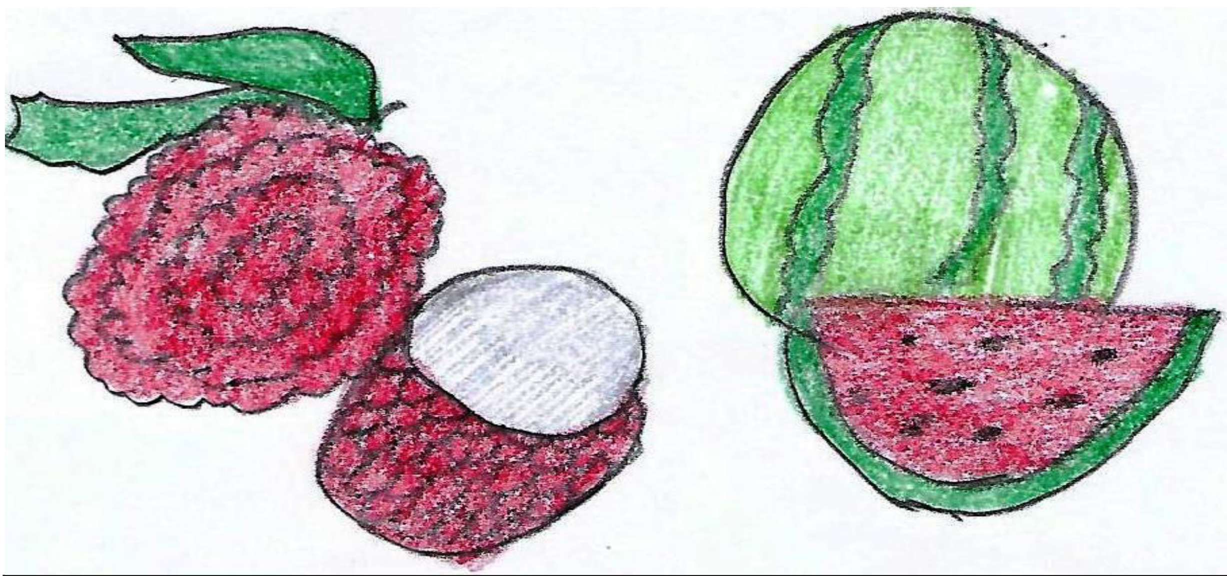

मिहिर शर्मा, अलवर

दक्ष आचार्य, बीकानेर

दिव्यांशी, बीकानेर

अमयरा, बीकानेर

रेणूका, बीकानेर

महक रील, बीकानेर

भूल-भूलैया

चांद मोहम्मद घोसी

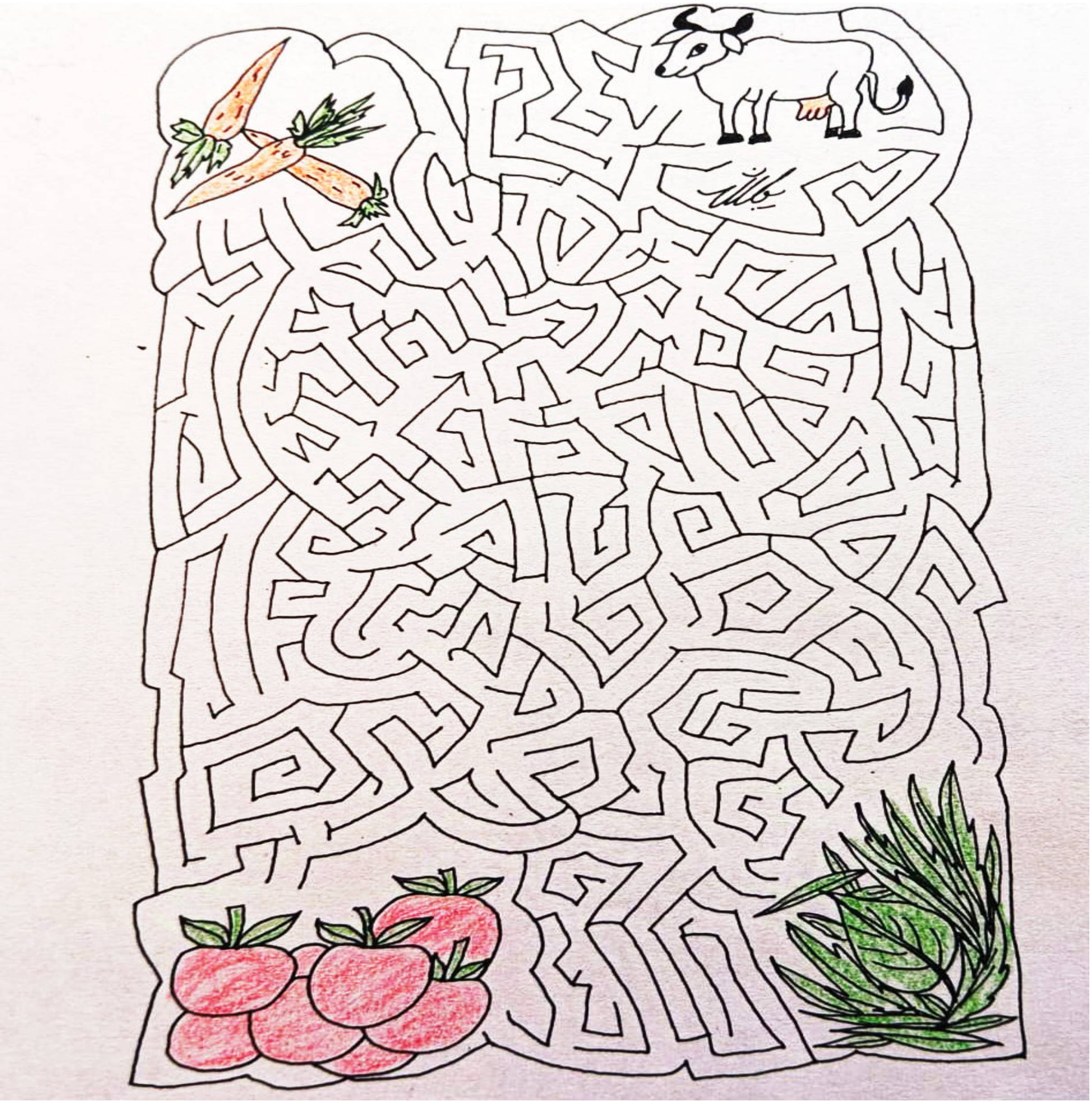

पता – नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी

दुनिया के देश

स्पेन

संजय पुरोहित

हेलो फ्रेण्ड्स ! कैसे हैं आप। किसी सैर–सपाटे वाले स्थान पर घूम कर आ गए होंगे। घुमाई के लिये जरूरी नहीं कि खुद ही जाया जाये, घर बैठे–बैठे ही 'चहल पहल' पढ़ते हुए भी घुमी–घुमी की जा सकती है। वो ऐसे कि हम अभी के अभी आपको किसी देश की सैर पर ले जाते हैं। आज जिस देश के बारे में हम आपको बताने जा रहे हैं, उसकी खासियतों के बारे में जानकर आपको खूब आश्चर्य होगा। यह देश है स्पेन। स्पेन का पूरा नाम है किंगडम ऑफ स्पेन। स्पेन मुख्यतया साउथ–वेस्ट यूरोप में अटलांटिक ओशन और मीडिटेरियन–सी के पार का प्यारा सा देश है। इसका सबसे बड़ा भाग इूबेरिया आईलैण्ड पर स्थित है। स्पेन की सीमा फ्रांस, अण्डोरा, पुर्तगाल से लगती है। स्पेन का क्षेत्रफल लगभग 5.6 वर्ग किलोमीटर है जो कि यूरोपीय संघ का दूसरा सबसे बड़ा देश है। स्पेन की जनसंख्या लगभग 5 करोड़ है। स्पेन की राजधानी है मेड्रिड। इसके अलावा अन्य मशहूर शहर हैं–बार्सिलोना, वालेन्सिया, सविल, सरागोसा, मलागा आदि है तो आन्दालुसिया सबसे बड़ा नगर।

स्पेन की हिस्ट्री पर नजर डालें तो यह कई बाहरी सत्ताओं के अधीन रहा। रोमन काल में यह हिस्पानिया स्टेट था। 8वीं शताब्दी में मुस्लिम मूरों ने इस परविजय प्राप्त कर ली और सैकड़ों सालों तक शासन किया। इसके बाद ईसाई राजाओं ने मूरों को हरा कर 1492 में अधिकार कर लिया। 16वीं और 17वीं संचुरी में स्पेन दुनिया की सबसे बड़ी ताकत वाला देश बन गया। 1936–39 में स्पेन में सिविल वॉर हुआ और जनरल फ्रांसिस्को फ्रांको ने सत्ता संभाली। 1975 में फ्रांको की मृत्यु के बाद स्पेन में लोकतंत्र की स्थापना हुई। स्पेन में एक संवैधानिक राजा हैं–फिलिप सिक्स्थ। स्पेन एक संसदीय राजतंत्र है जिसे पार्लियामेंटरी मॉनार्की कहा जाता है। यहां की करंसी यूरो है। स्पेन के लोगों और इनकी भाषा को स्पेनिश कहा जाता है। स्पेनिश भाषा विश्व की दूसरी

सर्वाधिक बोली जाने वाली मूल भाषा भी है। आगे बढ़ने से पहले आपको ये बता दें कि स्पेन ऐसा अनुठा देश है जिसके नेशनल एंथम में कोई शब्द नहीं है। ये केवल धुन है।

स्पेनी कला, संगीत, साहित्य और व्यंजन दुनियाभर में मशहूर है। स्पेन में 49 वर्ल्ड हैरिटेज साईट्स है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि स्पेन दुनिया का दूसरा सबसे

साभार – www.itsartlaw.org

अधिक भ्रमण किया जाने वाला देश है। स्पेनिश लोग अंग प्रत्यारोपण और अंग दान में पूरी दुनिया में नम्बर वन है। स्पेन की मेडिकल सर्विसेज की क्वालिटी दुनिया की सबसे बेस्ट मानी जाती है। स्पेन में 6 पर्वतमालाएं हैं। सबसे ऊंची चोटी पेरदीदो है। स्पेन में पांच मुख्य नदियां हैं, एब्रो, दुएरो, तागूस, दुआदिआना और गुआदलकीवीर। स्पेन का क्लाईमेट बदलता रहता है। नॉर्थ की ओर जलवायु ठण्डी और सेंट्रल स्पेन में गरमी रहती है। लगभग सभी स्पेनवासी कैथोलिक धर्म को मानते हैं। स्पेन में इनकम का मुख्य सोर्स एग्रीकल्चर है। यहां की मुख्य फसल गेहूं है। इसके अलावा नारंगी, धान और प्याज की खेती भी खूब होती है। स्पेन दुनिया में जैतून का सबसे बड़ा उत्पादक है। यहां आलू, रूई, तंबाकू तथा केले का उत्पादन भी होता है। दुनिया में सबसे ज्यादा भेड़ें स्पेन में पाली जाती है। वैसे बैल स्पेन का राष्ट्रीय पशु है। रेड कार्नेशन स्पेन का राष्ट्रीय पुष्प है। कॉर्क का दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक भी स्पेन है। दुनिया का बेस्ट केसर भी स्पेन का माना जाता है। स्पेन के कुल क्षेत्रफल में 10 प्रतिशत जंगल हैं। स्पेन में 5 हजार से ज्यादा समुद्र तट हैं। स्पेन खनिजों यानी मिनरल्स के मामले में भी कम नहीं है। लोहा, कोयला, तांबा,, जस्ता, सीसा, गंधक, मैंगनीज आदि की खाने हैं। संसार में सबसे बढ़िया स्तर का पारा अल्मादेन की खानों में पाया जाता है।

स्पेन कानूनी रूप से बहुभाषी है। इसका अर्थ यह है कि यहां एक से अधिक भाषाएं हैं। स्पेनिश तो मूल भाषा है ही, इसके साथ ही कैटलन, गैलिशियन, बास्क

और ओसीटान भी बोली जाती है। स्पेन का ट्रेडिशनल डांस और म्यूजिक फलेमेंको है। स्पेन में क्रिसमस के मौसम का सबसे महत्वपूर्ण दिन 'दीया डे रेयेस' है जिसे तीन बुद्धिमान पुरूषों के दिन के रूप में 6 जनवरी को मनाया जाता है। यह उस दिन का उत्सव है जब बाइबिल में तीन बुद्धिमान पुरूष बेथलेहम पहुंचे थे।

यहां बुलफाईटिंग भी पारम्परिक खेल है किंतु दूसरे देशों के लोग इसे पसंद नहीं करते। आपने चित्रकार पिकासो का नाम तो अवश्य सुना होगा। पिकासो स्पेन के थे। खान–पान की बात करें तो पाएला, टेपस, चुरोस विद चॉकलेट और संग्रिया स्पेन के प्रसिद्ध व्यंजन और ड्रिंक हैं। जैसे हम लोग रंगों से होली खेलते हैं, वैसे ही स्पेन के लोग 'ला टोमाटिना' फेस्टिवल मनाते हैं जिसमें बुनोल शहर में लोग टमाटर से युद्ध करते हैं। इसमें लोग एक दूसरे पर टमाटर फेंकते हैं। इस उत्सव में पूरा शहर ही लाल हो जाता है। स्पेन में 2500 से ज्यादा महल हैं। स्पेन के लोग फुटबॉल के दीवाने होते हैं। फुटबॉल स्पेन का राष्ट्रीय खेल है। एफ.सी.बार्सिलोना और रियल मेड्रिड क्लब बहुत प्रसिद्ध हैं। स्पेन की राजधानी मैड्रिड का रॉयल पैलेस और म्यूजियम बहुत प्रसिद्ध है। बार्सिलोना के समुद्र तट, गौड़ी की वास्तुकला, सेविल के फलेमेंको, ग्रेनेडा का अलहंब्रा पैलेस भी पर्यटकों को अपनी ओर खींच लाते हैं। पहले के समय में जब निब वाला इंकपेन नहीं हुआ करता था और पंख से ही लिखा जाता था, उस पेन को क्विल पैन कहा जाता था। इसका आविष्कार भी स्पेन में ही हुआ था। चलिए आखिर में आपको स्पेन की एक और मजेदार बात बताते हैं। अगर स्पेन में दोपहर को एक बजे कोई आपको गुड मॉर्निंग कहता है तो कन्फ्युज नहीं होना क्योंकि स्पेन में दोपहर का समय आमतौर पर दोपहर दो बजे के आसपास माना जाता है। बैंक केवल दो बजे तक ही खुले रहते हैं। स्पेन के लोग आराम तलब होते हैं। बाकायदा दोपहर 2 बजे से 5 बजे तक दुकाने और ऑफिस बंद हो जाते हैं ताकि लोग आराम कर सकें या झपकी ले सकें। इस झपकी को सीएस्टा कहा जाता है।

एक बात और बताते चलें दुनिया का सबसे पुराना रेस्टोरेंट भी स्पेन में है। इसका नाम है रेस्टोरेंट बोटिन। यह 1725 से लगातार चल रहा है। इसे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड ने खिताब दिया है। तो कैसी लगी स्पेन की ये सैर। हमें यकीन है कि आपको पसंद भी आई होगी और आपके जनरल नॉलेज में भी बढ़ोत्तरी हुई होगी। अगले अंक में चलेंगे एक और अनूठे देश की यात्रा को तब तक के लिये, बाय–बाय।

पता –समीप सूरसागर, बीकानेर

वट बीज

अंकुश्री

वट वृक्ष की विशालता देख कर सुधीर चकित था। उसने अपने पिता से पूछा, ''पिताजी, इतना बड़ा वृक्ष किसने बनाया है ?''

सुधीर के पिता ने कहा, ''इसे किसी ने बनाया नहीं है। हर पेड़–पौधा की तरह वट वृक्ष भी बीज से पैदा हुआ है।''

''बीज से ?'' पिता जी की बात सुन कर सुधीर को आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, ''मटर और चना के बीज मैंने देखा है। क्या मटर और चना की तरह ही विशाल वट वृक्ष के भी बीज होते हैं ?''

''हाँ ! वट वृक्ष ही नहीं, हर पेड़–पौधा का बीज होता है। बीज अंकुरता है और पनप कर पौधा बन जाता है। सुधीर के पिता ने उसे वट वृक्ष के बारे में समझाया और पूछा, ''तुम यह तो समझ गए कि वट वृक्ष का बीज होता है। मगर बता सकते हो इसका बीज कितना बड़ा होता होगा ?''

चित्र – राम भादाणी

''कितना बड़ा होता होगा ?'' सुधीर ने प्रश्न दुहराते हुए कहा, '' मैं मटर और चना के बीजों को देख कर अनुमान लगा सकता हूँ कि वट वृक्ष का बीज कितना बड़ा होता होगा। वह कम से कम हमारी गेंद जितना बड़ा तो होता ही होगा।''

''नहीं बेटा सुधीर !'' सुधीर के

पिता ने प्यार से समझाते हुए कहा, ''वट बीज बहुत छोटा होता है, सरसो से भी छोटा।''

''अच्छा ! ऐसी बात है !!'' सुधीर आँखें फाड़–फाड़ कर वट वृक्ष को देखने लगा। उसने पूछा, ''लेकिन इतने छोटे बीज से इतना विशाल वृक्ष ?''

सुधीर आश्चर्यचकित था। उसके पिता ने कहा, ''यही तो प्रकृति की विशेषता है। विशाल वृक्ष के लिए यह जरूरी नहीं है कि उसका बीज भी विशाल हो। कोई पौधा छोटा होगा या विशाल, यह उसके बीज और वातावरण पर निर्भर करता है। वृक्ष ही क्यों, हर विशालता और महानता की यही कहानी है। जिस तरह कुछ विशाल वृक्ष हैं, उसी तरह कुछ महान पुरुष होते हैं। कोई भी बच्चा महापुरुष बन सकता है, भले वह गरीब या साधारण परिवार का ही क्यों न हो। हर बच्चा वट बीज की तरह होता है, जो छोटे बीज से भविष्य में विशाल वट वृक्ष बन सकता है।''

पिता की बातें सुन कर सुधीर बहुत खुश हुआ।

पता – सिदरौल, नामकुम, राँची (झारखंड)

बचपन की यादें

आयुष्मान वर्मा

ओ मेरी बचपन की यादों
को जी लेने का
समय, समय
आ गया है।
ओ मेरी बचपन की यादें...

दोस्तो! चलो खेलें।

ओ मेरी बचपन की यादें
समय आ गया है
बाहर, बाहर
निकलने का।

ओ मेरी बचपन की यादों
को जी लेने का
समय, समय
आ गया है।
ओ हो...
मेरे बचपन!
ओ मेरे बचपन!

उम्र– 8 वर्ष
कक्षा– 2
केन्द्रीय विद्यालय,
आइजोल, मिज़ोरम

चित्र – मोहित सरावगी

चहल-पहल पर रचनात्मक गतिविधियां

इस वर्ष ग्रीष्मावकाश के दौरान श्रीमती शर्मिला जालान ने मॉडर्न हाई स्कूल फॉर गर्ल्स, कोलकाता की कक्षा 6 की छात्राओं को "चहल-पहल" पत्रिका को पढ़ने और उस पर आधारित एक रचनात्मक गतिविधि करने का कार्य सौंपा। इस गतिविधि का उद्देश्य विद्यार्थियों में पठन अभिरुचि बढ़ाना और साहित्यिक पत्रिकाओं के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना था।

गर्मी की छुट्टियों में लगभग 15 छात्राओं ने इस गतिविधि में उत्साहपूर्वक भाग लिया। उन्होंने चहल-पहल के अंक ऑन लाईन पढ़े तथा उस पर अपनी प्रतिक्रियाओं को छोटी बुकलेट के रूप में लिखकर लाए जोकि बहुत ही रोचक एवं पठनीय है। इस रचनात्मक कार्य हेतु तथा विद्यार्थियों को प्रोत्साहन करने बाबत उन्हें एक हिंदी बैज प्रदान कर सम्मानित किया। इससे विद्यार्थियों में भाषा के प्रति अधिक लगाव पैदा हुआ।

यहां बच्चों द्वारा बनाई गई कुछ झलकियाँ के चित्र है।

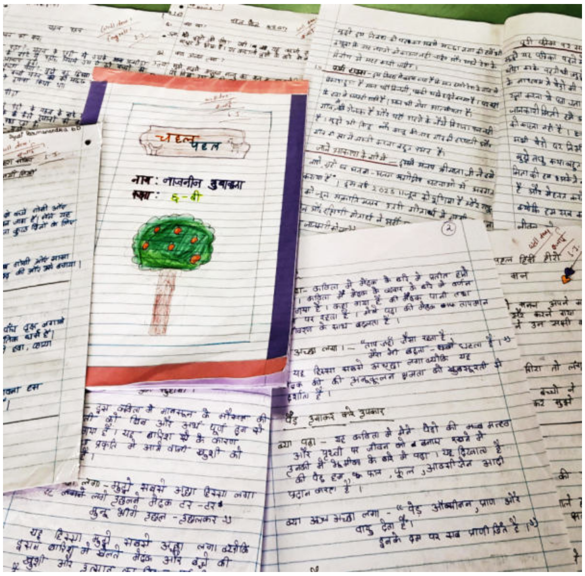

प्रस्तुति- शर्मिला जालान, कोलकाता

जाने आकाश के बारे में

संजय श्रीमाली

बच्चों खगोल विज्ञान की बात करते है तो आपको बताता हूं बुध ग्रह हमारे सौर मण्डल का सबसे छोटा ग्रह है। तथा सूर्य से सबसे नजदीक का ग्रह है। बुध ग्रह सूर्य की परिक्रमा 88 दिनों में पूरी करता है। बुध पर मुख्य रूप सें हीलियम एवं हाइड्रोजन गैसे हैं। तथा यहां का तापमान दिन बहुत अधिक गर्म एवं रात को बहुत अधिक ठण्डा हो जाता है। इस माह 4 जुलाई को बुध महानतम पूर्वी विस्तार पर दिखाई देगा। बुध ग्रह सूर्य से 25.9 डिग्री के अधिकतम पूर्वी विस्तार पर पहुँचेगा। यह बुध को देखने का सबसे अच्छा समय है क्योंकि यह शाम के आकाश में क्षितिज के ऊपर अपने उच्चतम बिंदु पर होगा। सूर्यास्त के तुरंत बाद पश्चिमी आकाश में बुध ग्रह को देख सकते हैं।

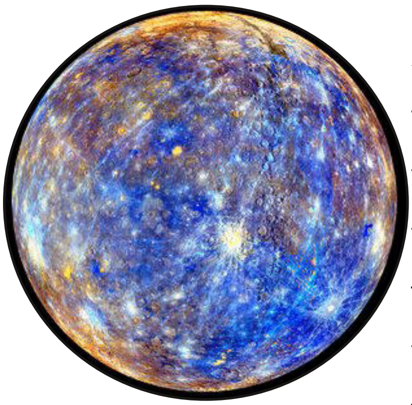

साभार www.stock.adobe.com

प्रति माह पूर्णिमा आती है। इस माह 10 जुलाई को पूर्णिमा है। इस दिन चंद्रमा पृथ्वी के विपरीत दिशा में स्थित होगा क्योंकि सूर्य और उसका चेहरा पूरी तरह से प्रकाशित होगा। यह चरण 20:38 यूटीसी पर होता है। इस पूर्णिमा को शुरुआती मूल अमेरिकी जनजातियों द्वारा बक मून के रूप में जाना जाता था क्योंकि नर हिरन साल के इस समय में अपने नए सींग उगाना शुरू कर देते थे। इस चंद्रमा को थंडर मून और हे मून के नाम से भी जाना जाता है।

साभार www.hindustantimes.com

इस माह 24 जुलाई 2025 को

अमावस्या है। इस दिन चंद्रमा पृथ्वी के सूर्य के समान ही स्थित होगा और रात के आकाश में दिखाई नहीं देगा। यह चरण 19:13 यूटीसी पर होता है। आकाशगंगाओं और तारा समूहों जैसी धुंधली वस्तुओं का निरीक्षण करने के लिए यह महीने का सबसे अच्छा समय है क्योंकि इसमें हस्तक्षेप करने के लिए चांदनी नहीं होती है। इस दिन आपको अन्य दिनों से काला गहरा आकाश दिखाई देगा। आप शहर से दूर जहां लाईट न हो वहां से आकाश का निरक्षण करेगें तो आप आसानी से आकाश में अनगिनत तारे, ग्रह, आकाशगंगाएं आदि देख सकते हैं। यह नजारा आपके लिए बहुत ही रोचक रहेगा।

डेल्टा एक्वारिड्स उल्का बौछार

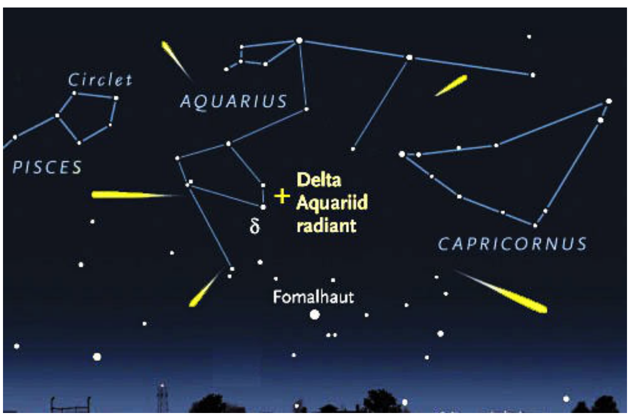

साभार www.skyandtelescope.org

है। जो प्रतिवर्ष निश्चित समयानुसार होती है। इस वर्ष यह उल्का बौछार 28 जुलाई से आरम्भ हो रही है।

डेल्टा एक्वारिड्स बौछार में अपने चरम पर प्रति घंटे 20 उल्काएं पैदा कर सकती है। इसका निर्माण धूमकेतु मार्सडेन और क्रैच द्वारा छोड़े गए मलबे से हुआ है। यह वर्षा प्रतिवर्ष 12 जुलाई से 23 अगस्त तक चलती है। इस वर्ष यह 28 जुलाई की रात और 29 जुलाई की सुबह चरम पर होती है। अर्धचंद्र शाम को जल्दी अस्त हो जाएगा, जिससे एक उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए आसमान में अंधेरा छा जाएगा। सबसे अच्छा दृश्य आधी रात के बाद किसी अंधेरी जगह से होगा। उल्काएं कुंभ राशि से विकीर्ण होंगी, लेकिन आकाश में कहीं भी दिखाई दे सकती हैं।

आकाश में ग्रहों की स्थिति
(13 जुलाई 2025)

ग्रह	उदय	अस्त	मध्याहन	स्थिति
बुध	7:44	20:50	14:17	दुर्बल
शुक्र	02:56	16:29	09:42	अच्छा
मंगल	10:00	22:23	16:16	अच्छा
गुरू	04:49	18:38	11:44	दुर्बल
शनि	23:24	11:21	05:36	अच्छा
यूरेनस	02:17	15:50	09:14	दुर्बल
नेपच्यून	23:21	11:23	05:22	दुर्बल

अजित फाउण्डेशन

प्रिय सदस्यों

आपको 'चहल-पहल' पढ़कर अच्छा लगा होगा। 'चहल-पहल' के पिछले अंको को पढ़ने हेतु आप अजित फाण्डेशन की वेब साईट https://ajitfoundation.net पर जाकर डाउनलोड कर सकते हैं। साथ ही अजित फाउण्डेशन पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों की सूचि https://www.libib.com/library लिंक पर देख सकते है और युवाओं के लिए होने वाली मासिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

संस्था के सामुदायिक पुस्तकालय में पुस्तकें पढ़ने के साथ-साथ खिलौने, पेन्टिग एवं अन्य रोचक गतिविधयों में भाग ले सकते है। इससे आपको बहुत कुछ नया सीखने को मिलेगा।

पुस्तकालय का समय - दोपहर: 12:00 से सायं 7:00 बजे तक है।

हमारा पता – अजित फाउण्डेशन
आचार्यों की ढाल, सेवगों की गली, बीकानेर। मो. 7014198275 9509867486
अपनी रचनाएं ईमेल पर ही भेजे chahalpahalnew@gmail.com